

DPN 6435

Title: 1. अंकुलापर्ण विधि 2. जलयज्ञ विधि

1. ANAKULĀRPPANA VIDHI 2. JALAYAJNA VIDHI

Run. No. 7160

Cat. No.

Micro. No.

Subject Riteal

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

नेपालभाषा विधि विधि
new direction

Size in cms. 22.7 x 7.7

Folios 47

Lines (in a page) 17/18

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thyaṣaphu / yellow

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

P. T. O.

आदिवाक्य
Beginning line ७ } अङ्कुलार्पण विधि

1. ॐ गणेशाय नमः ॥ अथ अङ्कुलार्पणं ॥ ॥ च्यान्दु इष्टं चकारि हस्त-

जलयद विधि सिपाये ॥ आम्हण ॥ मुरव सुद्धि गोयवात मुचाय वरपे ॥

2. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ सूर्यार्घः ॥ न्यास पाथे ॥ अर्धपात्र पूजा ॥
आत्मपूजा ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ विजायाय नमः ॥

सुभाषित वाक्य } ७ अङ्कुलार्पण विधि
Colophon:-

1. ॥ शिवं कुर्वन्मुने सत्त्वं अङ्कुलार्पणं कर्मणि ॥ अत्रगंधादि ॥ दक्षिणा ॥

जलयद विधि इति अङ्कुलार्पणं ॥ ॥

2. एतत् धुनडाशो, कोमालि पूजा ॥ आहुतयकार्ये ॥ इति जलयद विधि
समाप्तः ॥ ॥ आम्हण भोजनं ॥ ॥ एतत् सफुलि स्वल्पमात्रेण चोथा ॥ ॥

श्रीकृतन॥
मलयग्यपुस्तक

ॐ द्यादि न वा य ॥



१ॐ ग (सप्तमं) नमः ॥

अथ अक्षरार्थः ॥

आहुतं वधकालि ७ नू

सिपाय ॥ ब्राह्मण ॥ मुख

सुद्धिगमयन्मलमुवाच

वयप ॥ ०० का. प्रकाशन्द

पात १० रुयपातदकाय

वानकवसुषप्यावब्राह्म

सवाजानकाउगीर्थसमी

पसुअनवाजनसुहू. पू

नाहिनयजमानंनपव

न ॥ सुद्धरुमिमायाडा. न

करुसुपमानयाडाउरु

॥ उरुहमन ॥ वान ॥ यज

माननपुष्यरुजनयामकं

॥ ॥ अथ ॥ सिद्धिनमुखा

दि ॥ अथ ॥ यजमानस्य

अंकनार्थनवानूकाग्रह

नमः हिकापूजननिमित्त

र्थ. श्रीसूर्याय अर्घनमः ॥

अखद्युमन्दलाकालं गुनू

नमस्कान ॥ न्यास. अर्घपा

रुपूजा. आत्मपूजा. शारू

मिमाधनं ॥ पञ्चगव्यनहा

या ॥ ॐ पवित्र ॥ अर्घपात्र

हाय ॥ ॐ सुमिष्टियान ॥

चन्दन ॥ ॐ यददक ॥ ॐ

लंजविस्तृद ॥ ॐ जांरुलिनि

॥ ॐ यक्षपवीतं ॥ अक्षर ॥

ॐ दीघायस्त्रायवाना ॥ ॐ

धिपूजनं ॥ आधानस्यखा

दि ॥ ८ ॥ ध्यान ॥ सुवृषीष

मदानृपां शुद्धालंकालरू

षिगांरुनमयां गांतिक्षव

सुं. ध्यातासंपूजयत्तदिं ॥

पृथिविस्तूरुयध्यानपुष्य

नमः ॥ रुनसि ॥ वलि ॥

ॐ गङ्गा ३ रुक्मिणी नदी पायव
 रुक्मिणी ४ ॐ मांगंध्र पदी
 पवलिङ्ग रुक्मिणी १ ॥
 ॐ गङ्गा ५ ॐ नदी पाय
 वलिङ्ग रुक्मिणी २ ॥ २ ॥
 ॐ गङ्गा ६ ॐ नदी पायव
 लिङ्ग रुक्मिणी ३ ॥ ३ ॥
 ॐ गङ्गा ७ ॐ नदी पायव
 लिङ्ग रुक्मिणी ४ ॥ ४ ॥
 ॐ गङ्गा ८ ॐ नदी पाय
 वलिङ्ग रुक्मिणी ५ ॥ ५ ॥
 ॐ गङ्गा ९ ॐ नदी पाय
 वलिङ्ग रुक्मिणी ६ ॥ ६ ॥
 ॐ गङ्गा १० ॐ नदी पायव
 लिङ्ग रुक्मिणी ७ ॥ ७ ॥
 ॐ गङ्गा ११ ॐ नदी पायव
 लिङ्ग रुक्मिणी ८ ॥ ८ ॥
 ॐ गङ्गा १२ ॐ नदी पाय
 वलिङ्ग रुक्मिणी ९ ॥ ९ ॥

ॐ गङ्गा १३ ॐ नदी पायव
 लिङ्ग रुक्मिणी १० ॥ १० ॥
 ॐ गङ्गा १४ ॐ नदी पाय
 वलिङ्ग रुक्मिणी ११ ॥ ११ ॥
 ॐ गङ्गा १५ ॐ नदी पायवलि
 ङ्ग रुक्मिणी १२ ॥ १२ ॥
 ॐ गङ्गा १६ ॐ नदी पाय
 वलिङ्ग रुक्मिणी १३ ॥ १३ ॥
 ॐ गङ्गा १७ ॐ नदी पायव
 लिङ्ग रुक्मिणी १४ ॥ १४ ॥
 ॐ गङ्गा १८ ॐ नदी पायवलि
 ङ्ग रुक्मिणी १५ ॥ १५ ॥
 ॐ गङ्गा १९ ॐ नदी पाय
 वलिङ्ग रुक्मिणी १६ ॥ १६ ॥
 ॐ गङ्गा २० ॐ नदी पाय
 वलिङ्ग रुक्मिणी १७ ॥ १७ ॥
 ॐ गङ्गा २१ ॐ नदी पायव
 लिङ्ग रुक्मिणी १८ ॥ १८ ॥

20

15

10

5

20

15

10

5

0

पूष दीप ने वंश ॥ आप स्ना
 ७ ॥ ॥ ब्राह्मण पूजा ॥
 कुंड दयं नमस्तु ॥ विसर्ज
 नयाय ॥ ब्राह्मण चानद्या
 चक ब्राह्मण चानद्या नक
 स्वस्ति वाचन वाजन दत्त
 नस्त्यं चूवन ॥ दाल सनसा
 यावद नयन ॥ अंकु नार्थ
 नमस्तु पद नयन ॥ ॥
 सना वचन पं पं खन धन
 ॥ या ॥ गुन नमस्तु काल ॥
 न्यास ॥ अर्घ पाठ पूजा ॥
 आत्म पूजा ॥ खड्ग पूजा च
 न्दना दिन धूप दीप ॥ अरु
 गंधाद्यादि ॥ दान ॥ रुतल
 नि नख विथ ॥ कुंडी रुयष्ट
 म ॥ पूजा पथम दिवस या
 रुका ने वंश कर्प धूप दी
 प ॥ आप स्ना ७ ॥ दक्षिणा ॥

अविष्कृत वन्दनादि ॥ आ
 सिर्वादि ॥ साक्षि धाय थन
 पथम दिवस ॥ ॥
 पक्कथा सा धाय स ॥

हा	ना	हा	ना	हा	ना
न	पी	न	पी	न	पी

नाय ॥ ७ ॥ द्या ॥ हा कु ॥
 सना अपा न ५ ॥ अं तु लि
 १२ ॥ द्या ॥ पान ४ ॥ अं १७
 ॥ द्या ॥ पान ४ ॥ ॥
 अं ८ द्या पान ४ ॥ धक
 मन कान दिख ३३ ॥ व
 लंगन रुतल सना अपा न किं
 पं खन धन ॥ वीरि ॥ स्नान
 वा ॥ धमा ॥ ल रुदि ॥ मं
 ॥ दामल ॥ सिमिपू ॥ उय
 का ॥ कालन ॥ स्य क ॥ मास
 ॥ धर्मिना साद द न क न ॥
 वं थम कुन ॥ वाजन दाय

क॥ मूलमनुसङ्गात् ॥ ॥
 मङ्गलपत्रं ॥ हनदिनि
 लंखविथ ॥ वलिविथ ॥ ॐ
 सर्वरुक्तानि ॥ ॐ हागवू ॥
 हनिष्ठयावाहनं संस्तुय
 ॥ ॐ सर्वरुक्तानि ॥ ॐ वच
 ननादि ॥ हामल, नवा, सा
 उ, सालिकजा हनदिचून,
 थननापद्याय, थपूजा ॥
 ॐ सर्वरुक्तानि ॥ ॐ वलिं २
 ॥ वामदक्षनधिया अदक्ष
 दक्षनयंस्तस्य नय ॥ मनु
 ॥ ॐ सर्वरुक्तानि ॥ ॐ वलिं २
 ॥ थर्थं मधर्म ॥ पूर्वम ॥ क्षी
 नजा ॥ धन, साखन, ॐ उडा
 दिनाकपालयार्गं थवथ
 वदिगम, वलिविथ ॥ सं
 ध्याकालं संशुद्धनाडि सं
 थर्थं ॥ पूजापूर्ववत् ॥ ॥

१ॐ नमो भगवते ॥

अथ अंकलार्थविधिः ॥

नमः पूजनं ॥ अथादि ॥

मूर्ध्नि ॥ ग्यास ॥ अर्घपा

रु, कलपा, पूजात्मपूजा ॥

नमो दानार्चनं ॥

ॐ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॐ व ॥

ॐ शिवाय नमः ॥ ख ॥

ॐ पिबुवनमः ॥ म ॥

स्वस्वमकुलस्यथाविधिव

न पूजनं ॥ ॥

ॐ कल्याय ॥ ॐ वायव्य ॥

ॐ अस्तय ॥ ॐ नैऋत्य ॥

ॐ सामाय ॥ ॐ वैवस्वताय ॥

ॐ पश्चापय ॥ ॐ अर्नगाय ॥

ॐ उन्नाय ॥ ॐ वरुणाय ॥

नमः ॥ स्वस्वमकुलस्यथाविधिव

गायथा ॥ ॐ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

ॐ शिवानामासि ॥

ॐ विश्वालोकमसि ॥

ॐ यशस्वा ॥

ॐ नववायुहृदयमसि ॥

ॐ अग्निमूर्धा ॥

ॐ यशोवती ॥

ॐ ॐ मंदवा ॥

ॐ यमनदह ॥

ॐ पश्चापय नक्षत्रमा ॥

ॐ नमि रुस्य ॥

ॐ ज्ञानमिन्द्र ॥

ॐ वरुणस्यारुह ॥

नमो विद्वारि ॥ सिं वय ॥

॥ मन्त्र ॥ शम्भुकाय

सर्वाय, ईश्वराय शिवाय

व, सर्वनाकपक्षनाय ॥

ध्वनाय नमो नमः ॥ ॥

सामसंपूजय नक्षत्रम

वासदिनावधि ॥ अग्निवा

सदिनपाप, साममन्त्रास

20

15

10

5

0

यहुन॥ ॥षाठवंदया
 वद॥ ॐ नमः॥
 चंडायनमः॥ निष्ठा नाथाय
 शाही मां वंशां वंशां चंडना
 यश॥ मृगं कायश॥ चंडमसा॥
 तावाधिपकयश॥ क्षिप्रं नश॥
 अषधायश॥ हिमां वंशां
 द्विजनाकायश॥ मृदायश॥
 निष्ठापकयश॥ ॥
 कुं वयं ॐ सामवर्गं नवमन
 स्रुतं विदुः॥ यज्ञावक
 ४ सवमदि॥ ॐ कुं कस्त्या कु
 कं ककी क्षामि वन्दु वन्दु क्षा
 मृगममृगं नक्षत्रं मृगं
 वक्षं वन्दु सिं नपक स्रु
 नूनसिपकायकं वरुं ४ प
 नमस्य पशु क्षा कीयकं स
 रुसपाषं पृषयस॥ ॐ सा
 मः पवकं सामः पवकं स्रु

वदन्त्ये कृता या सोमं
 नृजैये मानाय पवकं १००
 षडर्कं पवकं १३ अपधी
 स्रु ४ पवकं यावा पृथिवी स्रु
 म्यवकं स्रु नाय पवकं वि
 र्वस्य स्रु दं वस्य स्रु पकं या
 निर्वि र्वस्य स्रु दं वस्य ४॥
 कुं ॐ नृ र्वस्य स्रु दं वस्य
 नाका मो गरु दं व कउवय
 १० नमः ॥ नपावकं म नृदं
 रुदयामि त्वा ग्वी रुषा
 क्षा सीमस्य रुपा रु स रुपा
 क्षान स्रु दं ॥ कुं ॐ दं वकं
 रुच काम्य वन्दु क्षा नदिः
 निस्रु वस्य नीमदि विदुः
 एनाकं १३ मृदा ना मा निद
 वंक्षा मा स्रु कं स्रु कं मृग
 रु ॥ कुं कं रु ॐ वृषं वृष रु
 स्रु वाचनं वरु कं ४ कु

cmts.

5

10

15

मनुष्यादिय सद्गुरुनां कः
 उपनिषद् निदिशुमपा
 हि॥ ॐ अग्निरुप नयस्वा
 हा सोमाय च न स्य नयस्वा
 हा मनूनामा ऊमस्वा रुदि
 याय स्वाहा । पृथिविमा न
 म्नामा हि ॐ सीमा इ अहं
 त्वा म॥ ॐ चंद्रमा अस्व न
 नाह पशुभिर्न नदिवि ।
 नयि मिहं गंवदुलं पूनस्य
 रुं रुवि न कि कसि कदम
 ॥ ॐ सोमा धनूं सोमा इ
 अर्चनमा ॐ सोमा वीनं
 कर्म स्यंद नानि ॥ सादन्यं
 विदथ ॐ सरुर्यं पिरु व
 संयाद दादमे ॥ ७ ॥
 आराहनादि ॥ ॥

नगावलिं दया ७ ॥ यथा ॥
 ॐ रुक्म्या नमः ॥ एष व
 लि रुक्म्या स्वाहा ॥ लाजा
 रुविडा दधि मिल सकजा
 थ रुक्म्या ॥ ॐ पिरु रुक्म्या
 नमः ॥ एष वलिं ॥ मिल
 रुक्म्या ॐ मि पिरु रुक्म्या ॥ ॐ
 य रुक्म्या नमः ॥ एष वलिं
 ॥ कलं रुक्म्या लाजा नालिक
 लादक सकपिन्द ॥ थ रुक्म्या
 नागया ॥ ॐ वद्वत्त ॥
 ४ एष वलिं ॥ पद्म अरु रुक्म्या
 रुक्म्या ॥ ॐ मि वाय २ ॥
 एष वलिं ॥ पूनमा धजा
 थ रुक्म्या ॥ ॐ विष्णु व
 नमः ॥ एष वलिं ॥ वाकजा
 थ रुक्म्या ॥ दद्रु पाग ॥

20

15

10

5

लाकपालवलिविथ ॥

ॐ ॐ न्यायश ॥ एष वलि ॥

तस्य ॥ स्वाहा ॥ ॐ अमय ॥

॥ एष वलि ॥ ॐ यमाय ॥

एष वलि ॥ ॐ नेम्याय ॥

एष वलि ॥ ॐ वनूषाय ॥

एष वलि ॥ ॐ वायव ॥

एष वलि ॥ ॐ कुवनाय ॥

ॐ ॐ न्यायश ॥ एष वलि

॥ ॐ पिषुव ॥ ॐ वडु ॥

स्मि ॥ धूप दीप प्रनिष्ठा ॥

जाप स्वाहा ॥ पिनामहन

मस्तु नमस्तु मस्तु महेश्व

न ॥ नमस्तु कमनाकान्क

गदाज्ञादकावक ॥ आसौ

पाक्षरुथमर्चान्पिरु

प्रद्वरुणीषवान् ॥ मिर्व

कूर्चमुमसर्वं कलार्थ

एककर्मलि ॥ अङ्गनादि ॥

दक्षिणा ॥ ॐ निम्नकलार्थ

धाम ॥ ॥ ॥

20

15

10

5

१ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ सूर्यार्चना ॥
न्यासयात्रा ॥ अर्घ्यपात्रपूजा ॥
आत्मपूजा ॥

१ॐ कृपाय नमः ॥

१ॐ विजयाय नमः ॥

१ॐ चक्राय नमः ॥

१ॐ प्रवृत्तय नमः ॥

१ॐ धर्मनमः ॥

१ॐ विश्वकर्माय नमः ॥

१ॐ विश्वकर्माय नमः ॥

१ॐ कृपाय नमः ॥

१ॐ गणपतये नमः ॥

१ॐ गुरुभ्यो नमः ॥

१ॐ दानपात्राय नमः ॥

१ॐ कृपाय नमः ॥

१ॐ नारायणाय नमः ॥

आवाहनादि ॥ ॥

१ॐ केशवाय नमः ॥

१ॐ नारायणाय नमः ॥

४ १ॐ माधवाय नमः ॥

१ॐ रघुर्विदाय नमः ॥

१ॐ विष्णवे नमः ॥

१ॐ मधुसूदनाय नमः ॥

१ॐ शिविक्रमाय नमः ॥

१ॐ वामनाय नमः ॥

१ॐ श्रीधराय नमः ॥

१ॐ हृषीकेशाय नमः ॥

१ॐ पद्मनाभाय नमः ॥

१ॐ दामोदराय नमः ॥

आवाहनादि ॥ ॥

१ॐ श्रिये नमः ॥

१ॐ वागीश्वर्ये नमः ॥

१ॐ कान्हे नमः ॥

१ॐ क्रियाये नमः॥

१ॐ मन्त्रे नमः॥

१ॐ स्तोत्रे नमः॥

१ॐ शक्तये नमः॥

१ॐ नमः॥

१ॐ मायाये नमः॥

१ॐ ध्याये नमः॥

१ॐ महिमाये नमः॥

आवाहनादि॥ ॥

आवाहनं॥ ॐ आवाह

यामिवनपंकवृक्षांश्चि

यर्थं लक्ष्मीपङ्कजवन

कान्तमममयं आर्च्यं

सनादनगवृक्षमनूद्ध

मंस्तु पूज्यं नृणां सम

ककमनीयमूर्ति॥ अथ

४पत्र४पत्रमस्तु विवा

नवं यथावाहिकासिद्धि

यथावृत्तननवायू४१२

दायत्येवदहनामथना

द्वयेति आवाहिकापिद्धि

नथास्तनूयेति वार्ता॥ मा

लाधनाच्युतविरूपनमा

र्थमूर्त्तमूर्त्तद्वयपत्रम

ध्वनमूर्त्तमूर्त्त आगच्छम

कनूदयांप्रतिमास्तनूप

पूजांगृहासकदनग्रहमा

कनूत्वं॥ स्तुपन॥ देह्यद

र्षसिनाकानीकनूत्तारु

किवत्सलमववर्तक

विश्रामिस्त्रिभारुवृत्तग

त्यक्त॥ ध्यानं॥ सुदर्शनग

दावाद्मध्वेवापस्य

याशिवामथा४कम्पपत्र

20

15

10

5

माधवं नृक्ष सं निरुं ॥ ॐ
 नृष्यं नमः ॥ प्रार्थना ॥
 प्रसीद रुग्णवन्निष्ठा प्रति
 मापलिकल्पिता ॥ आवा
 यदवदवदयथा मास
 स्रुपिर्मा ॥ पादार्घ्य ॥ पूषा
 रुग्णनाशलिनाय पूर्युद
 त्वाद्यमरुक्तिरुपदयुग्मं
 । रुक्मविष्णुं पूरु प्रसिचम
 रुक्मज्जन्मानुषपापविना
 क्षनम् ॥ स्नानमस्तु ॥ पाव
 नं सर्वतीर्थनां गंगादिस्त
 फसा गवेश स्नानं प्रकल्पि
 तं दवस्तु लिसे ॥ स्नपया
 म्यहं ॥ पूजनं ॥
 ॐ अं वासुदेवाय नमः ॥
 ॐ अं सैकर्ष्येणाय नमः ॥

ॐ पद्मानाराय नमः ॥
 ॐ अं अनिरुद्राय नमः ॥
 ॐ ॐ शूरे नमः ॥
 ॐ अनिरुद्राय नमः ॥
 ॐ क्रियाये नमः ॥
 ॐ विद्याये नमः ॥ ॥
 रुद्रयादि ॥ आवा रुनादि
 ॥ ॥ ॐ कं वायुग्रीम
 दिनाय नमः ॥ नावाय ना
 यवागीश्वरी ॥ माधवा
 यकाकी ॥ रगविन्दाय क्रि
 य ॥ विष्णुवक्षन्ति ॥
 मधुसूदनाय धृति ॥
 शिविकमाय ॐ ॐ ॥
 वामनाय श्रीमि ॥
 श्रीधनाय नमि ॥
 रुक्मीकक्षाय माया ॥

20

15

10

5

0

पद्मनाभाय नमः ॥
 दामोदनाय नमः ॥
 श्रीपूषा रुमाय नमः ॥
 आवाहनादि ॥ ॥
 अनन्ताय नमः ॥
 वामनाय नमः ॥
 सूर्याय नमः ॥
 श्रीकेशाय नमः ॥
 पूषा रुमाय नमः ॥
 वासुदेवाय नमः ॥
 हृषीकेशाय नमः ॥
 माधवाय नमः ॥
 मधुसूदनाय नमः ॥
 वनाभाय नमः ॥
 पद्मनाभाय नमः ॥
 आवाहनादि ॥ ॥
 केशवाय नमः ॥

गवूठ धजाय नमः ॥
 एवमिदं वाय नमः ॥
 अच्युताय नमः ॥
 विष्णवे नमः ॥
 अनन्ताय नमः ॥
 अप्पनाभ्याय नमः ॥
 अक्षय्याय नमः ॥
 जगद्धिमाय नमः ॥
 हंसस्मित्यक्तकाय नमः ॥
 नानावर्णाय नमः ॥
 चतुर्भुजाय नमः ॥
 हंसवाय नमः ॥ चक्राय ॥
 गदाय नमः ॥ मनथाय नमः ॥
 आवाहनादि ॥ ॥
 अनादि कथाय ॥ कृष्णाय
 ॥ इत्यादिनाथाय ॥
 शिविकामाय ॥ योगाम्ब

cmnts.

5

10

15

पीमाम्बनाय २॥ निह्याय
२॥ वनमालाय ४॥ विरू
षमाय २॥ श्रीनाय २॥
श्रीप नथ २॥ रुनय २॥
आवाहनादि ॥

शिवशक्ति कलश पूजा ॥
कुं वक्ष्मणनमः ॥ विषय
२॥ नूदाय २॥ गंगाय २॥
यमनाय २॥ सनखस्य २॥
गलुकेश ॥ कोशिस्य २॥ जा
नयेश ॥ नर्मदाय २॥ सफ
सा गर्भस्थाय २॥ मार्कण्डेया
य २॥ रुद्रदाजाय २॥ वहि
षाय २॥ रुद्राय २॥ उमद
नय २॥ विश्वामित्राय २॥
सफसपिस्थाय २॥ आवाह
नादियक्षापवीतकपूर्य

वा ॥ ॐ नृकलश पूजा ॥
ॐ नूदाय २॥ वज्ररुद्राय २॥
सुनाधिप नथ २॥ उनाव
नासनाय २॥ ॐ नूदाय २॥
लाकपालसंखान नव ॥
यक्षापवीतकपूर्य २॥ ॥
मह्यंजय कलश पूजा ॥
कुं मह्यंजयाय नमः ॥
अमृतीश्वनाय नमः ॥
महालक्ष्मीशक्ति सहनाय
२॥ संपूर्ण कलसाय नमः ॥
अश्वत्थमेश ॥ वलय २॥
व्यासाय २॥ रुद्रमन २॥
विहीषसाय २॥ कृपाय २॥
॥ पनसुनामाय २॥ मार्क
ण्डेयाय २॥ अष्टविंशती
विस्था २॥ आवाहनादि ॥

20

15

10

5

चंदनयक्षापवीतकपूर्यं
 व॥ ॥ आदित्यकलस
 पूजा॥ आदित्याय॥
 ॐ श्वनाय २ ॥ अग्निप
 ह्यधिवनाय २ ॥ आदि
 त्यादिनवग्रहस्था॥ १०॥
 आवाहनादि॥ चंदनय
 क्षापवीतकपूर्यं व॥
 गणपतय २ ॥ गणकलस
 ॥ युनव २ ॥ नागाय २ ॥ य
 क्षाय २ ॥ यद्विष्णु २ ॥ ग्रिये
 २ ॥ लक्ष्मी २ ॥ शिवाय २ ॥ ग
 मयलिंग २ ॥ चतुर्लोक २ ॥
 धुप्यं ॥ आवाहनादियक्षा
 पवीतपूर्यं व॥ — ॥
 कक्षवादिनमूलिकल
 सपूजा॥ ॥ अग्निपू
 पूजा॥ अमय २ ॥ शक्तिरुक्ता

य २ ॥ गजाधिपतय २ ॥
 द्वायसनाय २ ॥ आवाह
 नादियक्षापवीतपूर्यं व॥
 ॥ गणपतिपूजा॥ गण
 पतय २ ॥ उनपक्ष्मदि
 ध्रुवनाय २ ॥ आवाहनादि
 पूर्यं व॥ ॥ गमयसपूजा
 ॥ नंदाय २ ॥ रुक्मसुसुनस्य
 २ ॥ आवाहनादि ॥ ॥
 कोमारीपूजा॥ ब्रह्मा
 दिमारुकास्थानम ४ ॥
 कोमारीमूर्त्यनम ४ ॥
 आवाहनादियक्षापवी
 तपूर्यं २ ॥ ॥ अग्निना
 गदिसूक्ष्मववाय २ ॥
 स्वस्वनक्षत्रपालाय २ ॥
 वहिद्वानागनादिस्था २ ॥
 सर्वरुक्ता २ ॥ सर्वपिष्ठा

0

cmts.

5

10

15

२०
 १५
 १०
 ५
 अस्था २॥ आवाहनादि ॥
 यक्षापवीनपूर्य २॥ ॥
 मूर्तद्वय पूजा ॥ आदिस्था
 दिनवग्रहस्था २॥ अश्व
 रूमादिचित्रं जीवस्था २॥
 कलायेश ॥ मृदूरुय २॥
 दिनस्था २॥ वाजीस्था २॥
 मरुस्था २॥ वृक्षाय २॥
 संवत्सराय २॥ प्रतिप
 दादिनिधिस्था २॥ विष्क
 मादिपारगस्था २॥ मेषा
 दिद्वादष्टावाहिस्था २॥
 आवाहनादि ॥ ॥
 वन्दनमन्त्र ॥ वन्दनादिसू
 गंधार्थं कसूर्यसिद्धवा
 सिर्गारुक्ष्मापलपिर्गद
 वग्वार्थं मधुसूदन ॥

॥ ॥ नक्षत्रकवाच ॥ अथ वं
 कृष्णमंत्रेव कर्पूरवत्सम
 चिर्गमलया रुवर्गयक
 मिदंगन्धविलपनं ॥ ॥
 यक्षापवीनमन्त्र ॥ कर्पू
 सकर्हिर्गमं सुं सुं सुं सुं सुं
 गुणीकर्म ॥ पण्डितपुत्रनी
 काक्षरुकिरावर्गमया
 ॥ ॥ वसु ॥ विनायनऊ
 गत्सर्वं वेवूपमपजायर्ग
 वरुदसुं मया दहं सर्वं
 नत्सरुलीकन ॥ ॥
 मालापूर्य ॥ कालाविरय
 थायूर्य पंचवर्षसुर्गधि
 रिषवित्रिग्रन्थिर्गमा
 लांग्रहासपत्रमश्व ॥ ॥
 दुल्लि ॥ त्वदंगमं रुवेर्नि

लार्धनमास्तुमा॥ आपदीन
 त्यादि॥ मलुलदयके स्वा
 नदाखावाय॥ आपस्काशा
 नूम्पलुवकुगदमनिचर्ष
 खंडुजाफंमकनसूपुष्टं।
 माधसमासस्मिन्मीष्टका
 लकाकिस्मिन्मीष्टं पलमामि
 माधवं॥ पापादं॥ नायन
 हास॥ भुंमनाह्मि॥ अरु
 गंधादि॥ मलुलमदासक
 ॥ वंथूननंनकवर्षु अ
 मिकानवासकिष्णवर्षु
 दक्षिणकदम्बकवर्षुने
 मयककर्ककनिलवर्षु
 यश्चिमपद्मनागवर्षु
 वायुकासमहापद्मनाग
 ह्रीवर्षु उरुवर्षु ह्रीवपा

लनागवर्षु॥ नम
 कलीकनागवर्षु॥ मध्या
 वनवर्षु॥ हाकिवा
 द्धुर्धुल्ल॥ ॥ अलकुलु
 समीपंगत्वा॥ आपवलि॥
 गुवनमस्कावन्नास॥ भुं
 र्ववर्षुयश्चिमायदुष्ट॥
 ४॥ कनाह्ववर्षुनास॥ अल
 पादुअर्धपादुपूजा॥ रुक
 लुद्धि॥ आत्मपूजा॥ भुं
 वांवां वूं वूं आत्मननमः
 प्ररूपान् उवलिविय॥
 श्लो गद्यपद्यवलिंगक
 रखाहा॥ भुं सर्वरूप
 लाधिपनयसर्वरूपस्थाव
 लिंगक रखाहा॥ शूनं
 नादिवर्षुनागस्थावलि

20

15

10

5

ॐ ह्रीं ३

माहापतिमिलितं वा
वृषीवल्लरुनं॥ आदिद्या
दिकमसपूजय॥ नका
यथाकर्मसिपंचसूक्तं
संवद्यजितलन॥ धय॥
॥ पंचगव्यं द्विप॥ पंचवर्त
पावदं च॥ ॥ नका नाग
पूजनं॥ तीर्थवारुनं॥ गंगा
या॥ सनित॥ सर्वा॥ समूडा
श्च सनां सिवा॥ सर्वानि तिर्था
नितदाते ये वज्रलदाजदा
॥ आयातु यजमानस्य इपि
नक्षयकानका॥ धूपदीपा
दिपूषु क्रतिना स्य॥ ६७ ॥
नयसं॥ उत्सर्जनं॥ सर्वरुन
स्य उत्सर्जनं॥ मयैकं कुलमूर्ति
नं॥ नक्षत्रं सर्वरुनानि स्नान

पानावगमरुने॥ वाक्म ल
पूजा॥ संवाकृतिजथावि
धियं समापय॥ ॥
ॐ नमावद्व॥ कृष्ण उक्रम
नजलयं कृष्णं॥ यजमा
नपृथ्वराजनं॥ अथादि॥
यामरुक्तादि॥ सिद्धिन
मु॥ ब्राह्मणनसूर्यार्घ्यं॥
गुननमस्का॥ न्यासं कृत्वा
॥ ॐ कानद॥ कनसामान्या
र्घपाठपूजा॥ नकुलनात्मा
नं॥ संचितं कं विक्षयप
र्षं वयं गमकृष्णमादाय॥
ॐ मला॥ लुकि स्नानखं
गदत्ता॥ वलिपदानं॥
ॐ गमनांत्वा॥ ग॥ ॐ नमा
वलुक्षय॥ ॥ ॐ यानव

दस ॥ ३ ॥ ॐ चर्म चर्म ॥ दि
 क् ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 नागवलि ॥ धूप दीप ज
 प ॥ ॐ निर्वृत्त्यादि
 ॥ अरुगंधाद्यादि ॥ अमु
 यरुद्रवलि विसर्जनं ॥ स्म
 नक्षिपत् ॥ ॐ त्वदविष्टद
 मिलाजा विक्षपनं ॥ ॐ मा
 नस्माकमिदं पक्षपनं ॥
 ॐ त्वां मत्तु उल्लखनं ॥
 ॐ नत्वा जामि स्यात्तु दक्ष ॥
 गायत्र्या ह नमः ॥ पश्चिम
 नदिक्षि ॥ कृष्णलेखा ॥
 अश्वस्तं च समीगर्हति ॥
 ॐ सद्यस्तस्य निमज्जनं ॥
 वक्रधन्यपक्षपनं ॥
 ॐ वीर्ययश्मनि ॥ वीरि

क्षपनं ॥ इंदवस्य स्वमि क्
 क्षासनं ॥ ॐ दिनश्च रुद्रमि
 विष्णुनासनं ॥ ॐ पद्मानन
 ॥ सुवर्धुन उरुपद्मपञ्च
 नर्तनिधाय ॥ ॐ नक्षासीति
 ॥ घृतासनं ॥ ॐ वक्षोदक्ष ॥
 पंचस्रुतिस्तु उल्लखनं ॥ ॐ युकनमनसमि
 वागीश्वरी पूजनं ॥ ॐ दि
 नश्च वल्लुगिलक्ष्मी पूजनं
 ॥ त्वामत्तु कृष्णकाशग्र
 दक्ष ॥ ॐ न्धनास्त्वमि क्
 निधाय सफवापववमि ॥
 उर्ध्वान्मा कर्णो ॥ ॐ मृग
 वस्तुमि ॥ कृष्ण पूजनं ॥ च
 न्दनादि पूजनं ॥ ॐ ॐ म
 भवन्ममि ॥ मीर्थजलं ह्रीं

20

15

10

5

ख अर्घपाठनिधाय आ
 लनादक्षिणस्थाय ॥ स
 लिमलामखनयावनिम
 र्चनं ॥ ॐ नमो हस्त्यै ॥
 वलिपदानं ॥ ॐ अथवा
 ॥ यवाक्षनमिलन ॥ कथा
 दाक्षिण ॥ कथादजलं सलि
 यमन ॥ ॐ कथादानय
 स्वाहा ॥ ३ ॥ इत्यथ ॥ ॐ क
 थादमयि ॥ कथादजलं
 पवित्र्य ॥ वहि ० द्विप ०
 ॥ उपसर्जनं ॥ ॐ ॐ देवाय
 नि ॥ अथ दक्षिण ॥ लंख ॥ वन
 समूलमनुसजयित्वा ॥
 धनमूला ॥ नमो जलं गृहि
 त्वा ॥ स्वात्मानं विष्णुमूर्ति
 श्रित्वा ॥ ॐ आ पा अस्मान्

॥ गंखमलखनयाव अग्नि
 कूंडविपदक्षिणं ॥ वाक् ॥
 यजमानस्य पक्ष्मीपति
 शायकैरेलस्य पनसू मू
 र्धनमसु ॥ ॐ मयि गृह्णाम्य
 य ॥ जलस्य पनं ॥ ॐ स्व
 स्तिनामिमी ॥ ॐ ममार्नि
 त ॥ कथयन्मनपञ्चाय ॥
 जलपूजनं ॥ ॐ आपाहि
 स्तुति ॥ अथ याटनं ॥ मुख
 दादिव तुर्वदासनं ॥ ॐ
 अग्निमीड ॥ ॐ धत्वा ॥ ॐ
 अग्न आया ॥ हन्नादवी ॥
 ॐ मय्यदाय अग्निं वज्राय
 स्वादि ॥ ४ ॥ ॐ दायवज्र
 दक्षं स्वादि ॥ १० ॥ स्वर्ग
 यनम ॥ पातालानयनम

20

15

10

5

४॥ दय समीध हाम ४॥
 एकमर्का वलखा हा ॥
 एकं नृषींशु हया ७॥ कुं ७
 धाददवमि ॥ जलसंमुखी
 कनसं ॥ वझासनं ॥ पला
 नासनं ॥ ॐ निवलासनं
 ॥ कुं वझासनं ॥ दमासनं ॥
 पला नाय ॥ दमासनं ॥
 १ कुं हि नं ॥ ग ॥ कुं ॥ दं
 विष्णु ॥ कुं द व स्य त्वमि ॥ अ
 सुदसं ॥ पला न प्र न र्थ ॥
 कुं प स्य ० न दमि ॥ प न र्थ
 ॥ कुं अनसि नासि ॥ स
 माऊनं ॥ कुं आ पादिष्टमि
 ॥ आप पूरु ॥ वझा पला न
 पूजनं ॥ कुं वझासनम ॥
 पञ्चापनय ॥ सर्वथाद

वस्था २॥ कुं वझासनं ॥
 कुं पला नाय २॥ कुं विष्णु व २
 ॥ अस्था २॥ अपां पनय २॥
 वनूलाय २॥ ॐ दं विष्णु ३॥
 कुं आवझासन वझा ॥ ददि
 ॥ वझासुपनं ॥ कुं विष्णु
 वना नमसि ॥ उरु न पला
 नसुपनं ॥ पूर्ववत्पूजनं ॥
 कुं दम नमसि ॥ दिगविदिश
 पवि सुनसं ॥ पंच वा नू ॥
 कुं त्वना अना ॥ कुं स त्वना
 अना ॥ कुं अजा अना ॥ कुं
 य नं ॥ कुं उदय व नू ॥
 ॥ अंथा विधि मनुष्य कल
 क्षत्रं ॥ ॥ अष्टम
 पद्म पूर्व अन न नाग कुरु
 चनं ॥ अनं नाय ॥ दमा

20

15

10

5

0

cmts.

5

10

15



20

15

10

5

0

cmts.

5



ॐ समुद्रा इर्मिर्मिध मां उ
 दनद्रपा ७७ नमस्तुमा
 नटा ७७ नमस्तुमा
 दक्षिणिना देवानामस्तुमा
 नारिः ॥ इर्वाह नंदिप ७ ॥
 ॐ स्वनद्रधं च ॥ उपस्तुमा
 ॥ कर्त्तुं नदिमस्तुमा ७ ॥
 कर्त्तुं नदिमस्तुमा ७ ॥
 कावनवानीवस्तुमा ७ ॥
 मस्तुमा ७ ॥ वास्तुमा ७ ॥
 कामोस्तुमा ७ ॥ कामोस्तुमा ७ ॥
 वान ॥ मापिमा ७ ॥ नदिमस्तुमा ७ ॥
 नकुलपुष्टिमा ७ ॥ नकुलपुष्टिमा ७ ॥
 नयदिमस्तुमा ७ ॥ नयदिमस्तुमा ७ ॥
 गार्वनविधिमस्तुमा ७ ॥
 पुष्टिमा ७ ॥ ॥ दक्षिण ॥
 नकुलपुष्टिमा ७ ॥ नकुलपुष्टिमा ७ ॥
 नकुलपुष्टिमा ७ ॥ नकुलपुष्टिमा ७ ॥

नकुलपुष्टिमा ७ ॥ नकुलपुष्टिमा ७ ॥
 वातिदिफनस्तुमा ७ ॥
 लां कुन ७ ॥ ॐ नमस्तुमा ७ ॥
 ॐ आ पाशुमा ७ ॥ दक्षिण ७ ॥
 समुद्राय ७ ॥ ॐ समुद्राय ७ ॥
 ॥ इर्वाह नंदिप ७ ॥ ॐ स्व
 नद्रधं च ॥ उपस्तुमा ७ ॥
 अतिपातामस्तुमा ७ ॥
 अतिपातामस्तुमा ७ ॥
 स्वस्तिकना ७ ॥ स्वस्तिकना ७ ॥
 नकुलपुष्टिमा ७ ॥ नकुलपुष्टिमा ७ ॥
 नकुलपुष्टिमा ७ ॥ नकुलपुष्टिमा ७ ॥
 नकुलपुष्टिमा ७ ॥ नकुलपुष्टिमा ७ ॥
 नकुलपुष्टिमा ७ ॥ नकुलपुष्टिमा ७ ॥
 नकुलपुष्टिमा ७ ॥ नकुलपुष्टिमा ७ ॥
 नकुलपुष्टिमा ७ ॥ नकुलपुष्टिमा ७ ॥

20

15

10

5

एगमग्रीवायामकनखक०
 पंचविंदकनारुस०रुमि
 नलावलियुग०॥पद्मका
 नागनाकासोमदासमिदि
 रुषिक०॥गनरुवन्नसो
 म्भनऊलाहिंसमदीकन
 ॥पश्चिमदिक्कयपद्मः
 नागार्चनयादि॥ ॥
 वायव्य॥महापद्मनागा
 यश॥भानं॥संखवर्धुमदा
 पद्मासक्तकंरुषूधूलध
 कासंखधूलाकनूविनेरु
 पिनामूर्द्धिसर्वदा॥ॐग
 धुकीनये॥ॐनदिक्क०
 योजिष्ट॥ॐरुसमदा
 यश॥ॐसमदंगवृखादा
 कविर्दंगवृखादादवइं
 सवितावंगवृखादामिज

वनलोगवृखादादनाइ
 गवृखादावृन्दासुमिगवृ
 खादायावापृथिवीगवृ
 खादायइंगवृखादास्व
 मंगवृखादादिव्यंनराग
 वृखादाग्निवेश्वाननंगवृ
 खादानमाभदादियवृ
 दिवंगंधूमागवृउत्तर्था
 निपृथिविरुस्मनापृषसा
 दा॥इर्वाकर्कसंखदग्धं
 द्विपञ्चापापसा॥नक
 पद्मसमवर्धुविस्काविन
 रुतावली॥खरुधूलंगन
 विनालांगलंमूर्द्धिसर्वदा
 ॥महापद्मामदानागम
 मदाकायामदायूनि०
 सूर्यष्टकनूनागसंमृप
 सन्ननवकसा॥चायवादि

अथ मन्त्रपद्मना गार्व
 नस्यादि॥ ॥ उरुन॥
 हंखपालाय शम्भानं॥ शु
 कारु॥ हंखपालस्याद्वि
 नखाधनादन॥ विखदय्य
 वलापक॥ श्रीवायामकन
 खया॥ कुंकोठिक्केश॥ कुंआ
 पादवापकिरुत्ता॥ कुंशिधु
 समुद्राय॥ कुं समुद्रासि
 नरु॥ इर्वाक्कनं हंखनइग्ग
 द्विप॥ आजापक्का॥ इर्वादि
 ल॥ वस्याम॥ हंखनूप॥ पद्म
 लावन॥ एकवर्षाकिरु
 ग्रीवामहाहागीसुविर्य
 वानसंखपालकुं (गल्ल)
 मदाकावृत्तधीलवान्म
 मद्यासर्वसंपन्नांजलपू
 र्णमहीकन॥ उरुनदिग्ग

मथहंखपालार्चनस्यादि॥
 ॥ श्रीहान॥ कुंकुलिका
 य॥ शम्भानं॥ कुलिकंरुपू
 वर्धुर्ह॥ वन्दुलाद्विगमक्त
 क॥ दीफरुगक्तताकाप
 ॥ धुरुल्लक्षलक्षिण॥ कुं
 वन्दुलागानये॥ कुंउप
 कर्ण॥ कुंसागनाय॥ कुं
 समुद्रासिद्विधवाश्रुता
 स्वेकपाददिनसि व (व्यावा
 गंस्तेनुमसिसदास्यमस्य
 दावामामासकाफमधना
 मधपकपमाकिस्वस्तिम
 स्मिन्पथिदवयानरुयान्ति
 उस्यमा॥ इर्वाक्कनं हंखनइ
 ग्गं द्विप॥ आजापक्का॥ सु
 दिफनल्लक्षगश्चमल्लिग
 श्चानिलीषत॥ मदाकिधा

नदह श्रवस्वार्द्धकन मरु
 न॥ कलिकाना गना अं
 मलावलपला कम॥ क
 नाउमरुनिं कर्चिं सुप्रमंन
 नरुमिल॥ ॐ नानदिष्ट
 निकलिकार्चनविधनस्त
 र्वपविप्रुमसु॥ पंचवा
 नृषं॥ ॐ नन्दायेश रुद्राय
 श॥ अयायेश॥ विक्रायेश॥
 पूरुयेश॥ ॐ त्वनाश्रुयेश
 ॥ ॐ सत्वेनाश्रुयेश॥ ॐ अया
 श्रुयेश॥ ॐ यरुमं॥ ॐ उ
 नृषं वनृषं॥ ॐ नि॥ ॥
 कनामश्चमनृषं चर्चनं॥
 ॐ आधनायैष्टिका
 सनं॥ ॐ धर्मादिनाश्चनं
 ॥ वनृषं मरुना नाजापा
 णरुक्ता जलाधिप॥ हिम

कन्दन्दवर्षुशामनिवत्त
 विरुषिण॥ वामरागस्ति
 तादवीश्वामवर्षुसुयोव
 नी॥ नानावत्तविचिजंग
 दर्वर्षिगृष्टुपानिना॥ ॐ
 नपूर्यश॥ ॐ नमा सुमर्ष
 श्वा॥ ॐ या ॐ षवा॥ ॐ य
 वामीना॥ ॐ वनृषं श्रु
 ॥ ॐ दवीनापा॥ ॐ वसाप
 विरुमसि॥ ॥
 ॐ कलायेश॥ ॐ विकलाय
 श॥ सुकलायेश॥ निकला
 येश॥ कलायलायेश॥ क
 लाकलायेश॥ नसकला
 येश॥ पातालायेश॥ आवा
 दनादि॥ रुक्ताकायेश॥
 ॐ श्वनायेश॥ ॥ उपरुक्ता
 ॐ॥ एतानि स्तूयमानानि स्व

यंदवाऊनादन०॥पांऊ
 लिपुटसंवज्ञाछिनसांऊ
 लिनि०क्षिप०॥यथाहि
 लपिनाकामान्अनंना
 दिउऊंगमा०ववर्षपल
 यांननअरुनाजानिपूर्व
 वरु॥विष्णुलेहन्यकरुमो
 पुन्यमंमहादन०॥रुड
 गनुमहादवा०॥नरुस
 महासुखं॥सफदिपास्त
 वझाउसफपाकालरुव
 उउत्सर्गनायस्तर्वं०
 सायंसववावनं॥वनरुस
 चनविधतस्तर्वपनिपू
 र्वमसु॥ ॥रुग०रु
 छिलार्चनं॥कुंवरुअसुय
 त्यादिन्यामं॥आधनादि
 ॥८॥धर्मादि॥८॥वनरु

सायमकवासनाय२॥
 ध्यानं॥नागपासधनंरु
 सुनानानलोघविग्रह
 ॥०॥कधवलंवायदन
 संमकवासनं॥ध्यानपू
 र्वं२॥शंऊलि०॥कुंद्रौव
 नृसाय२॥कुंद्रौऊया०॥
 ॥२॥३॥ ॥अरुना
 मादिवद॥कुंवरुसुखं
 ॥कुं००मंमवनरु॥कुंया
 ००ववा॥कुंनमासुसर्थसा
 ॥कुंअमअमिक॥धूप
 दीपरुलनेवयं॥कुंनमा
 रुकिंपतिष्ठा॥जाप०रु
 ॥०॥कुंनागपा०रुकादि
 र्यंऊलवाऊमहावल०॥
 निममि०॥वविखा०॥
 नागवाऊप०नम०॥

20

15

10

5

20
15
10
5

यथाकार्यस्तुतिना च न
विधत्त सर्वपनिपुत्र
मस्तु ॥ ॥ न नावत्या
दित्यस्तमस्तु स पूजय ७
॥ ॥ न नार्थपदासा
धनं ॥ कुं या ग या गति
॥ विधा आनं रुनं स्य ७
॥ कुं प्रविशुस्तु ॥ पविशुच
ननं ॥ कुं विप्राले लो टं ॥
पविशुचं धनं ॥ अर्घपाठ
निधाय ॥ कुं दवस्यत्वा ॥
धृवा अस्तु द्दसं सं ख ॥ कुं
पस्य ७ वद ॥ कुं अनसि
तासीति ॥ सं मार्कनं ॥
कुं आपादिस्तु ॥ आपपू
र्ण ॥ कुं दवीना पा ॥ उया
ज्ञा वसं ॥ कुं यस्मा ७ ७
॥ वृदिगन उय ॥ कुं अग्नय

त्वा ॥ अस्तु कुं सिचय ७ ॥
कुं देवाय कर्मसर्वव
स्तु सिचय ७ ॥ अस्तु वलपा
कलीकु उपली न यामि ७
निधाय ॥ आशुषा लीच
कस्तुली अस्तु द्दसं ॥ कुं द
वस्यत्वा ॥ कुं पस्य ७ ॥
पुनर्यसं ॥ कुं अनसि तासी
नी ॥ सं मार्कनं ॥ कुं मधीना
पयासि ॥ इध पाठ इध ७
निधाय ॥ दवदय कवसा
ववृविधान ॥ कुं समीक्ष
ति ॥ कस्तु जि नारु मो नि
धाय ॥ कुं धान्यमसी ति ॥
कस्तु नग्रहनं ॥ कुं अदित्ये
नास्तीति ॥ कस्तु ननिनी
दसं ॥ कुं समीक्ष ति उ दूष
न कस्तु लीनिधाय ॥ कुं वृ

हञ्जवासिमसैलमादा
 य॥ॐ हविः कदहीति॥
 उद्वलसूय॥ॐ कृ
 णमीति॥ कृत्तन॥ॐ य
 ष्य॥ॐ यमित्वा॥ॐ प
 नापूता॥ॐ अपरुता॥
 ॐ दवाव॥ॐ दवस्य॥
 पूजने॥ गमनमादि॥
 ॐ सफसृषयः॥ॐ ॐ
 त्वा॥ अमका॥ वृत्तिका
 निपकाल्यवन्पादनि
 धाय॥ॐ अपरुता॥ॐ
 नञासि॥ॐ पविः कृ॥
 ॐ दवीनापा॥ पूर्ववतर्
 खञ्जवाकाय॥ॐ यष्य॥
 द्या॥ॐ अमयत्वा॥ॐ कृ
 प्राप्या॥ॐ एषाद॥ॐ अ
 दिखे॥ॐ रुतयत्वा हत्वा

दि॥ हंखद्ववाकापूज
 नं॥ॐ वृद्धा १२॥ॐ विष्णु
 व॥ लञ्जो १॥ॐ धूवसीति
 ॥ उपयमनकृणमादाय॥
 ननाजलदक्षीया॥ॐ या
 निकल्पनामत्वा हति॥
 वनूषाध्वनं॥ॐ ममिध
 यिं॥ अष्टादक्षद्वर्गिदि
 त्वा॥ कृ॥ हानवृद्धा हं स्य॥
 ॥ॐ मनः ४५॥ अपनयत्वा
 हति॥ त्यागमदितं॥ उप
 यमनवन्धनं॥ आपाना
 मकनर्ष॥ वनूषायत्वा ह
 उहवक्षमादवस्य॥ ददि
 ॥ पिहस्यस्वभा॥ॐ ॐ
 त॥ ॐ ॐ ॥
 ॥ ननश्च
 कृत्तमि॥ॐ अमयत्वा ह
 त्यादि॥ दिवत्वादिजिह्वा

20

15

10

5

ॐ नमः ॥ पंचगव्यहोमः ॥ ॐ
 ॐ नमः ॥ नमो वेदाङ्गि
 ॥ सख्यदायस्वाङ्गि ॥
 ॥ अङ्गादि ॥ यज्ञवेदसाम
 यजुः अथर्ववेदः ॥ ॐ ति वेदा
 ङ्गि ॥ पंचवानुषं ॥ ॐ त्व
 न्नामग्नयङ्गि ॥ ॐ ति पं
 चवानुषं ॥ नमो घृताङ्गि
 ङ्गि ॥ ङ्गि पुष्पिपय्यर्क
 ॥ ॥ नमो यथा कर्म ॥
 निर्मलं नमः ॥ अग्निनाहन
 दास्नाना ॥ दक्षिवियक ॥
 पूर्वस्मय ॥ दवदहाकि
 या ॥ नमो दवपक्षालीकू
 पपूष्पविहीतत्वां न्यास
 नः ॥ धनं ॥ ॐ त्वं ॥ नमो
 दवाञ्चनं ॥ अर्घपाङ्गस
 हि ननदवसमीपंगत्वा

न्यासादि अर्घपाङ्गपूजा
 सपूजा ॥ आसनकूदव
 इव उया ॥ आधनादि ॥
 धर्मादि ॥ पक्षालीपू
 ष्पा निष्ठाकूपवापी इव
 सा ॥ मकनासनाय ॥ २ ॥
 धनं शंङ्गलि ॥ दवया
 दानवदनं पूजनं ॥ ॐ
 ॐ मम ॥ ॐ वनस्यारु ॥
 ॐ नमो सुसर्पस्था ॥ च
 न्दनादियक्ष्णपवीतपू
 ष्पधूपदीपकापस्कारं
 ॥ अङ्गगंधादि ॥ पूजनं
 कर्मसाङ्गि ॥ दववनुष
 पक्षालीयार्ग आङ्गि
 हीखनदाय ॥ पणिष्ठा ॥
 ॐ मनाङ्गि ॥ ॐ ति कर्म
 सपूजनाङ्गि ॥ नमो वि

20

15

10

5

२०
 १५
 १०
 ५
 श्वकर्मपूजनं ॥ हस्तार्घ
 वन्दनं यस्मात्पूजितं पूष्य
 दक्षिणायास्तुतिज्ञाय ॥
 दवज्ञाय मंडयति प्रदक्षि
 र्भकानय ॥ दवर्ग ७था
 यस्तपस्तपस्विनाय वाहि
 नं गल्लं डाहापस्तनय ॥
 दवर्ग ७था ॥ धर्ग ७था मर्ग ७
 ॥ आर्ग ७था मर्ग ७ ॥ १०० ॥ ॐ
 स्ति नारुव विवर्ग ॥ वास्तु
 मयर्ग मानकनमीनं प्र
 माली दवर्ग मर्ग ७ ॥ ॐ
 अथवा नाहत्यादि ॥ अथा
 दि ॥ ॐ प्रगिस्तिना सिद्ध
 वं मर्ग प्रगिस्तिना रुवर्ग मर्ग
 सान्निध्यं प्रगिपय मर्ग य
 जमाना रुवर्ग य ॥ ७ ॥ ७ ॥
 मुदिपदां निर्या ७ ॥ ७ ॥

व ७ ७ पदां ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 कानां ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 ॥ यर्ग मानस्य रुवर्ग मर्ग ७
 १ ॥ यर्ग मानस्य रुवर्ग मर्ग ७
 दवर्ग मर्ग ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 दिनी सफसागना ७ ॥ ७ ॥
 दाका ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 वस्ति नारुव ॥ ७ ॥ ७ ॥
 मर्ग मानस्य रुवर्ग मर्ग ७
 निष्ठाकल रुवर्ग निमिर्ग ७
 २ ॥ वस्ति नारुव ॥ ७ ॥ ७ ॥
 दक्षिणा मर्ग ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 दवर्ग मर्ग ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 ॥ प्रगिष्ठाकल ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 मर्ग ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

२०
 १५
 १०
 ५
 १
 ध्वकर्मपूजनं॥ हस्तार्घ
 वन्दनयस्त्रापुवीरपूष्य
 दक्षिणायास्तुतिज्ञाय॥
 दवज्ञायमंडयतिप्रदक्षि
 र्भकानय॥७॥ दवक७था
 यस्तपस्तपकिवाय॥ ब्राह्मि
 न७लैडाहापस्तनय॥
 दवकय॥ ध्वज॥ मक७
 ॥ आहुतिविय॥ १००॥ ॐ
 स्तिवारुवविद्वग॥ ब्राह्म
 सयजमानकनमीनंप्र
 क्षालीदवधिस्यं॥ ॐ
 अथवावाहत्यादि॥ अथा
 दि॥ ॐ प्रणिष्ठिनासिदं
 वंहास्तुप्रणिष्ठंरुवत्स्यं
 सान्निध्यं प्रणिपद्यकंय
 जमानाहुवर्द्धय॥ ७॥ हान्ना
 मुद्विपदांनिर्हं हान्नामुव

वहु७पदां॥ हान्नामुवत्स्यं
 कानां॥ हान्नावाहं॥ नयेवच
 ॥ यजमानस्यरुह्यायंपद्य
 १ पूजमवान्धवा७नदंडुसर्व
 दवाध्वदवस्त्रायंनमास्तु
 र्भ॥ यवच्चन्द्रश्चसूर्याश्चभ
 दिनीसफसागवा७याव
 दाका७गंगश्चनावत्स्यं
 वस्तिवारुव॥ यजमान
 स्यगंगामूर्ध्निप्रक्षालीप
 निष्ठाजलजकूनिमिरुंस्ति
 वस्त्रायस्तिवारुव॥ स्तिव
 दक्षिणाकयक॥ मकरं॥ ना
 दवास्तु॥ गहननत्वाचकं
 ॥ प्रणिष्ठाकल॥ हान्नामूर्ध्नि
 धक॥ चंदनसिंदूरस्यु
 क्षासिर्वादि॥ मूर्ध्नि॥ अत्रनि
 प्रणिष्ठा॥ ॥

ॐ निमिन्न दान विधि ॥ ॥
 नमो जल दानं ॥ कृष्ण जलं
 गृहीत्वा ज्ञेयमानं ॥ अथ
 ह्यादि ॥ दमजं नो यमात्र
 अममयं सीस दानं ॥ प
 निष्कृष्टा विधानां वदवत् ॥
 वाक्मनाय च ॥ आदो गमा
 हविषा र्ण रूमी जश्च पूजा
 यनं ॥ हफिरुता दया सर्व
 समद रुमिदं जलं ॥ पानी
 यं घन वाक्म पावनं पत्र
 मं मरुत ॥ पानीयस्य पदा
 नन हफिरुव निष्ठा ॥ श्वमी ॥
 यजमानस्य पनाली प्रति
 स्तं जलय रुनिमित्थं ॥ ग
 वाक्मनादि सर्व रुमस्य ॐ
 यं जलं वनू सदेव नं दातु
 मरुमूत्तं ॥ ॐ कदादा ॥

दक्षिणा ॥ ॐ निजल दान वा
 र्थं ॥ ॥ संखा दक्षि ॥
 नाजा दक्षाय जमानाचार्य
 ॥ दक्षपाति ॥ वाक्मना पूजा
 ॥ दक्षपाति ॥ ॐ शो ॥ दक्षपाति ॥
 प्रक्षिक ॥ ॐ शं वकं ॥ यवक्ष
 न्यादि ॥ वलिप दानं ॥ ॐ
 गनानां स्वा ॥ ॐ जामवदस
 ॥ ॐ ॐ मानू जाय ॥ ॐ च न
 चन ॥ ॐ नमावलुसाय ॥
 ॐ अचेनानो ॥ ॐ द्याथ
 दि ॥ ॐ अन्न प नं ॥ ॐ ला
 दि दक्षालो कपाल सर्व द
 वमाने वद्य दर्शनं ॥ दवा
 दि पूजनं ॥ यथा वद स ॥
 वाक्मनादि अन्न संकल्प ॥
 मलाद्या दक्षि मनुष्य कपा
 स पील दय ॥ ॐ शो ॥ दक्षपाति ॥

पंचवाचसं॥ प्रायश्चित्त
राम॥ वहु॥ स्वस्तित्यादि॥
वाङ्मनसदक्षिणादानं वाच
नं॥ वलिह्वनं॥ संश्रवण
नं॥ पवित्रभावनं॥
मूर्त्तिनाथं पूजयिष्ये॥
तुंदवागमः॥ आध्याय॥
हिमस्यत्वात्मानं॥
आर्षं सामं कलस्त्रां॥
तुं नागपाश्यादि॥
तुं श्रवणा॥ अरुगंधादि
॥ बुद्धापलातविमूर्त्तिनं॥
छाषाक्षति॥ अर्घपाशुल
द्वयकं न्यासलिकाथ॥
यजमानारिषकं आर्षा
र्वादानं॥ मरुत् आरथि
पतिष्ठा॥ सूर्यसाक्षि॥ थ
नधूनकाशं कोमालिपूजा॥

आक्षुप्तकाथ॥ निजल
यक्षविधिसमाय॥ ॥
वाङ्मनसं॥ ॥ धर्मदू
तिस्त्वत्माउनवाया॥ ॥

20

15

10

5

0

१ॐ नमो ब्रह्मणे ॥ ॥
 १ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॥
 नहीमाघनाघनः कारुण
 श्रवणानामस्तु कन्दनानि
 मिषः एकवीनः ॥ ॥ ॐ
 नाऽश्रुजयत्सा कमिन्दुः ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 जिष्णुनायका नमस्तु
 ननधधुना नदिन्दुस्तजय
 ननस्तद्वधं यत्नानवः ॥
 ष्टुस्तनवधुः ॥ २ ॥ ॥ ॥
 ष्टुस्तुऽमनिषमिहिविष्ठा
 म० सुष्टासयुधः ॥ ३ ॥ ॥
 (नन) ॥ ० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 वास्तुसंज्ञग्रधन्वा प्रमिदि
 नारि नस्तु ॥ ३ ॥ ॥ ॥
 पविदीपायावधेन नस्तु
 हामि ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 यथाजयन्तस्मा कम्यध्वि
 तानथानाम् ॥ ४ ॥ ॥ ॥
 ह्यायस्तुविनः ॥ ५ ॥ ॥ ॥
 स्तान्वाजीस्तुमानऽउग्रः
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ह्याजोऽमिन्दुनथमधिष्ठ
 (नवि) ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 विदम्बजवाहृष्टयन्तम
 मप्रमृष्टममाजसा ॥ ॥
 ० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 न्य० सुखायाऽश्रुनस्तु
 रुधस्तु ॥ ५ ॥ ॥ ॥
 मरुसागममादया
 वीनऽममन्युनिन्दुऽद
 ध्ववनऽष्टनायाऽष्टय
 स्माक० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 स्तु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

cmnts.

5

10

15

गन्तुं ॐ ह्रीं ह्रस्व निनदि
 नि० ह्रीं मयि कृ० उ विष्णु ह्रीं
 ह्रीं मयि कृ० ॥ १७ ॥ म म्मा नि
 न व म्मा नि कृ० दया मि साम
 ह्रीं ना जा म् नानू व ह्रीं म
 उ ना र्वी या व नू ल कृ० कृ०
 ह्रीं उ ज य न ह्रीं नू द वाम
 द नु ॥ १८ ॥ य द वा द व ह्रीं उ
 न न्द वा स ह्रीं कृ० मा व य म्
 म्मि म्मा नि ह्रीं द न सा वि
 ह्रीं म्म कृ० त्वं ह्रीं म ॥ १९ ॥
 ष दि दि वा ष दि म कृ० म ना
 ह्रीं सि व ह्रीं मा व य म् वा य
 म्मि म्मा द न सा विष्णु म्म
 कृ० त्वं ह्रीं म ॥ २० ॥ ष ठि र्ज
 म्म दि ह्रीं प्र २० ना र्वी सि
 व ह्रीं मा व य म् ह्रीं मा नि

ह्रीं द न सा विष्णु म्म कृ० त्व
 ह्रीं म ॥ २० ॥ पू न नु मा द
 व र्ज ना ० पू न नु म न सा वि
 य ० पू न नु विष्णु ह्रीं मा नि
 जा म् व द ० पू नी दि मा ॥ २१ ॥
 ॥ प वि ष ह्रीं पू नी दि मा ह्रीं
 त द व दी य ० ॥ म्म कृ० त्व
 कृ० त्व नू ॥ २२ ॥ य ह्रीं प वि
 कृ० म्मि म्मा नि ह्रीं म कृ० म न
 वा व ह्रीं न पू ना ह्रीं मा ॥
 २३ ॥ प व मा न ० ह्रीं म्म कृ० त्व
 ० प वि ष ह्रीं वि ष ह्रीं म ॥
 ० पा मा स पू ना ह्रीं मा ॥ २४ ॥
 उ र्वी र्वी द व म्म वि ष ० प वि
 कृ० म्म व न व मा म्पू नी दि
 विष्णु ० ॥ २५ ॥ वैष्णव वी
 पू न नी द वा ग म्म ह्रीं मा नि

वक्षुक्तु नो वीरपुष्पा ४१॥
 यामदक ४२॥ धमादधुव
 य ०॥ स्यामपकया नयीनो
 म॥ २७॥ अरित्वा ०२॥ नो
 नमा इष्टा १०॥ वधनव ४१
 ००॥ नमस्यजगत् ४२॥ स्वर्
 क्षमी ४३॥ नमिदुक्तु ४४॥
 २०॥ नत्वा वां २॥ अन्थादिथा
 नपार्थिवानजा नानजनि
 थन ॥ अश्वय कामधवनि
 लुवाजिना गयनत्वा ह
 वाम ह ॥ २०॥ त्वामिद्वि ह
 वाम ह ॥ नो वाजस्यका
 नव ४॥ त्वाम् ०३॥ चिनुस्य
 नवनत्वा ०३॥ सास्वर्चन ४॥
 २०॥ सत्त्वर्चाश्च ०३॥ ऊरु
 रुधुयाम रुक्मवाना ३

अडिव ४१॥ गमश्च ०॥ नथ
 मिदुक्तु नम ०३॥ वाचुजी
 वम ॥ ३०॥ नान्युर्वयानि
 विदाहम रुचयम् ०३॥ गमि
 ०३॥ मदिनिदुक्तु ममिधम ॥
 अर्थमसम्बन्ध ०३॥ सामम
 धिना सत्त्वमीन ४२॥ रु
 गमयस्क ०३॥ ३७॥ कन्ना
 द्वाभामया ०३॥ वाचुषजन्
 माता पृथिवी गतिनाथो
 ४१॥ नन्वावा ४२॥ सामसू काम
 या ०३॥ वस्तु दधिना ४२॥ रु
 धिष्णा यवम ॥ २०॥ नमी
 ४३॥ न ०३॥ गमसूक्तु ४४॥ स्थिति
 धियश्चिन्तमवसे ०३॥ रु
 चयम् ०३॥ पूषा नायथावद
 सामसू ०३॥ धनद्विना पाय

20

15

10

5

॥४५॥

॥

॥

अग्निहोत्रं अन्नादिदान

रुतं ॥ दानवत्ता कर्त॥

वृद्धस्य निना कं ॥ गृहसम

गुणान्दानं वेष्टुं दुद्विगुलं

स्मर्तुं दक्षिणं त्रिगुलं मया

दृष्टं दुलं वाक्म (सस्मर्तुं ॥

अग्निं यवेवसा दृष्टमावा

र्थाद्विगुलं न न ॥ आत्मकं

समसा दृष्टमनकत्वमि

दक्षिणं ॥ । ॥

20

15

10

5

0

cmts.

5

10

15



20

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

